अध्याय - पंचम

शोध सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

सारांश एवं निष्कर्ष

भूमिका :

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है क्योकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के श्रंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में शिक्षण को प्रभावी बनाने की क्षमता हो तथा शिक्षक प्रभावी हो प्रभाविता शिक्षक की शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रभावी शिक्षण के बिना कक्षा में विद्यार्थियों को बांधें रखना कठिन है, विद्यार्थियों की अधिगम स्तर को प्रभावित करता है, शिक्षण द्वारा अधिगम होने पर बच्चों का संपूर्ण विकास हो इसके लिये शिक्षकों को प्रयास करना होगा। शासकीय स्तर पर चाहे कितना ही मनोहर योजना बना ली जाये किन्तु अध्यापक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करे तो यह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती । इसलिये अध्यापकों में शिक्षण के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होते हुये शिक्षण को प्रभाविता बनाने के प्रयास करते रहना चाहिये।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि बैतूल जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता कितनी है।

शीर्षक :–

"बैतूल जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावीशीलता का अध्ययन"

शोध के उद्देश्यः—

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सहसंबंध के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जाति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
9. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में सेवा अन्तर्गत प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।

परिकल्पना :—

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता के घटकों में सार्थक संबंध नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।

3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।

4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।

5. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।

6. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभाविता पर जाति का सार्थक प्रभाव नहीं है।

7. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर शैक्षिक योग्यता का सार्थक प्रभाव नहीं है।

8. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर व्यावसायिक योग्यता का सार्थक प्रभाव नहीं है।

9. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभाविता पर सेवा अंतर्गत प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

न्यादर्शः—

प्रस्तुत अध्ययन में बैतुल जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के लिये चयनित किया गया, जिसमें मुलताई तहसील के 50 शिक्षकों एवं 50 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया।

उपकरण :—

डॉ. प्रमोद एवं डी.एन मूथ्या द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभाविता परिसूची का उपयोग किया गया।

तकनीकः—

उपरोक्त 100 शिक्षको का शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन के लिये डॉ. प्रमोद कुमार के शिक्षक प्रभाविता सूची का प्रमाण किया गया । अंको की गणना द्वारा प्रतिशत के आधार पर की गयी। प्राप्त अंको का मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन निकालकर टी परिक्षण ज्ञात किया गया।

चर : शोध समस्या में निम्न चर है।

आश्रित चर : शिक्षण प्रभाविता।

स्वतंत्र चर : लिंग, अनुभव,योग्यता, उम्र, वैवाहिक स्थिति, जाति।

परिणाम —

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गयी। परिकल्पना के आधार पर जो निष्कर्ष सामने आये वह निम्न है।

1. शिक्षक प्रभाविता के घटकों में अतः संबंध पाया गया।
2. लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता ने सार्थक संबंध पाया गया। स्त्री शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों की प्रभाविता में लिंग का प्रभाव पाया गया। शिक्षक प्रभाविता के घटकों पर शिक्षकों के लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया।
3. उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही पाया गया । शिक्षक प्रभाविता के घटकों पर भी उम्र का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया।
4. शिक्षकों के अनुभव के आधार पर शिक्षकों में शिक्षक प्रंभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शिक्षक प्रभाविता के घटकों पर भी शिक्षक के अनुभव का कोई प्रभाव नही पाया गया।

5. वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एवं शिक्षक प्रभाविता के घटकों पर भी शिक्षक के वैवाहिक स्थिति होने या नहीं होने का प्रभाव नही पाया गया।
6. जाति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर पाया गया। तथा प्रभाविता के व्यवसायिक एवं भावनात्मक घटकों पर जाति का प्रभाव पाया गया। परन्तु शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक और व्यक्तित्व घटको पर प्रभाव नहीं पाया गया।
7. शैक्षिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शिक्षक प्रभाविता के विभिन्न घटकों पर भी इसका कोई प्रभाव नहीं पाया गया।
8. व्यावसायिक योग्यता के आधार पर शिक्षको के शिक्षक प्रभाविता में सार्थक प्रभाव है। एवं प्रभाविता के विभिन्न घटकों पर भी व्यावसायिक योग्यता का प्रभाव पाया गया।
9. सेवा अन्तर्गत प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। तथा शिक्षक प्रभाविता के विभिन्न घटकों पर भी इसका प्रभाव नहीं दिखाई देता है।

सुझाव :

1. शिक्षकों को अपने व्यवसाय में आस्था, निष्ठा एवं लगन होनी चाहिए तभी वह विद्यार्थियों एव समाज के प्रति अपने विविध दायित्वों को पूर्ण कर सकेगा।
2. शाला में शिक्षण संबंधित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये, जैसे – वाद–विवाद प्रतियोगिता, स्नेहसम्मेलन, निबंध लेखन आदि।
3. शिक्षको के लिये प्रशिक्षण शिविर रखी जाती है वह उसमें शिक्षकों को सहभागी होना चाहिए।
4. शिक्षकों में अपनी व्यावसायिक उन्नति हेतु सदैव जागरूक रहना चाहए।

भावी शोध हेतु सुझाव :

1. उच्च्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको में भी शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते है।
2. शहरी, ग्रामीण आदिवासी विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते है।
3. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, अध्यापन की प्रभावशीलता विद्यालय की असर कार्यकर्ता पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते है।
4. शिक्षक प्रशिक्षणार्थी में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते है।
5. डाइट जैसी समस्याओं के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते है।